



P-ISSN: 2706-7483

E-ISSN: 2706-7491

NAAS Rating (2025): 4.5

IJGGE 2025; 7(7): 40-46

www.geojournal.net

Received: 08-05-2025

Accepted: 10-06-2025

डॉ. पुरुषोत्तम लाल चंद्राकरसह प्राध्यापक, भूगोल अध्ययनशाला, पं.
रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय, रायपुर,
छत्तीसगढ़, भारत**डॉ. टिके सिंह**सहा. प्राध्यापक, भूगोल अध्ययनशाला, पं.
रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय, रायपुर,
छत्तीसगढ़, भारत**दीपक चंद्राकर**जे.आर.एफ.सी.एस.आई.आर., देहरादून,
उत्तराखंड, भारत

छत्तीसगढ़ का धरातलीय स्वरूप—पाट एवं पहाड़ी प्रदेश में स्थित ऊँची चोटियों की समीक्षा

पुरुषोत्तम लाल चंद्राकर, टिके सिंह, दीपक चंद्राकर

DOI: <https://www.doi.org/10.22271/27067483.2025.v7.i7a.384>

सारांश

किसी भी देश या प्रदेश की धरातलीय संरचना का उसकी जलवायु सामाजिक-आर्थिक विकास एवं परिवहन एवं हवाई उड़ान में महत्वपूर्ण भूमिका होती है। छत्तीसगढ़ का भूगोल एवं छत्तीसगढ़ सामान्य ज्ञान की पुस्तकों एवं ऑनलाईन पोर्टल में छत्तीसगढ़ की सबसे ऊँची चोटी को तथा मेकल पर्वत श्रेणी की सबसे ऊँची चोटी को अलग-अलग आलेखित किया गया है। इसलिए यह विषय भ्रामक एवं विवादस्पद बन गया है? और छत्तीसगढ़ उच्च न्यायालय बिलासपुर में छत्तीसगढ़ लोक सेवा आयोग रायपुर इस विषय में याचिका एवं दावा आपत्ति पत्र दर्ज कराए गए हैं। यह विषय स्थानीय अखबारों का महत्वपूर्ण मुद्दा रहा है। अतः राज्य के पाट एवं पहाड़ों की सबसे ऊँची चोटियों की समीक्षा करना आवश्यक है। प्रस्तुत समीक्षा का आधार भारतीय सर्वेक्षण विभाग का धरातल पत्रक को बनाया गया है। इस अध्ययन से राज्य के धरातलीय संरचना के पाट एवं पहाड़ की ऊँचाई के संबंध में सटीक ज्ञान प्राप्त होगा।

कूटशब्द: पहाड़, पाट, ऊँची शिखर, धरातल पत्रक, गजेटियर

प्रस्तावना

छत्तीसगढ़ राज्य देश के वृहद उच्चावच खण्ड प्रायद्वीपीय पठार के उत्तरी पूर्वी भाग में विस्तृत है। इस प्रदेश को धरातलीय संरचना की दृष्टि से पहाड़ी, पाट एवं पठारी एवं मैदानी प्रदेशों में विभक्त किया जाता है। प्रदेश में पाट एवं पहाड़ी प्रदेश 27 प्रतिशत भाग में विस्तृत है। ये धरातलीय स्वरूप प्रदेश की जलवायु, सामाजिक-आर्थिक विकास एवं सुरक्षा को प्रत्यक्ष रूप से प्रभावित करते हैं। इन भागों में खनिज, वन एवं जल संसाधन का अपार भण्डार है।

राज्य के पहाड़ी भागों के साथ-साथ पाट क्षेत्र में भी ऊँची-ऊँची चोटियाँ स्थित हैं। आकारमितीय विश्लेषण के अनुसार प्रदेश के पाट क्षेत्रों की ऊँची चोटियाँ, पहाड़ी क्षेत्र के ऊँची चोटियों के बीच अंतर बहुत अधिक नहीं है। छत्तीसगढ़ का भूगोल एवं छत्तीसगढ़ सामान्य ज्ञान की पुस्तकों एवं ऑनलाईन पोर्टल में छत्तीसगढ़ की सबसे ऊँची चोटी को तथा मेकल पर्वत श्रेणी की सबसे ऊँची चोटी को अलग-अलग आलेखित किया गया है। इसलिए यह विषय भ्रामक एवं विवादस्पद बन गया है? अतः राज्य के पाट एवं पहाड़ों की सबसे ऊँची चोटियों की समीक्षा करना आवश्यक है।

अध्ययन क्षेत्र

छत्तीसगढ़ राज्य भारत के मध्य पूर्व में 17° 46' उत्तरी अक्षांश से 24° 6' उत्तरी अक्षांश तथा 80° 15' पूर्वी देशांतर से 84° 24' पूर्वी देशांतर के मध्य विस्तृत है। राज्य का कुल भौगोलिक क्षेत्रफल 135191 वर्ग कि.मी. है। इसकी सीमाएं उत्तर में उत्तरप्रदेश, उत्तर पूर्व में झारखण्ड, दक्षिण पूर्व में उड़ीसा, दक्षिण में आन्ध्रप्रदेश एवं तेलंगाना दक्षिण पश्चिम में महाराष्ट्र तथा पश्चिमोत्तर में मध्यप्रदेश द्वारा निर्धारित (मानचित्र 1) है।

प्रदेश में मेकल श्रेणी, बैलाडीला, अबूझमाड़, छुरी-उदयपुर एवं चांगभखार-देवगढ़ की पहाड़ियाँ प्रमुख पहाड़ी भाग हैं। मैनापाट, सामरी पाट, जशपुर पाट तथा जारंग पाट प्रमुख पाट क्षेत्र हैं। महानदी, गंगा, नर्मदा, गोदावरी और ब्रम्हाणी प्रवाह तंत्र की नदियों से प्रदेश की ये धरातलीय संरचना हरा-भरा एवं सुसज्जीत है।

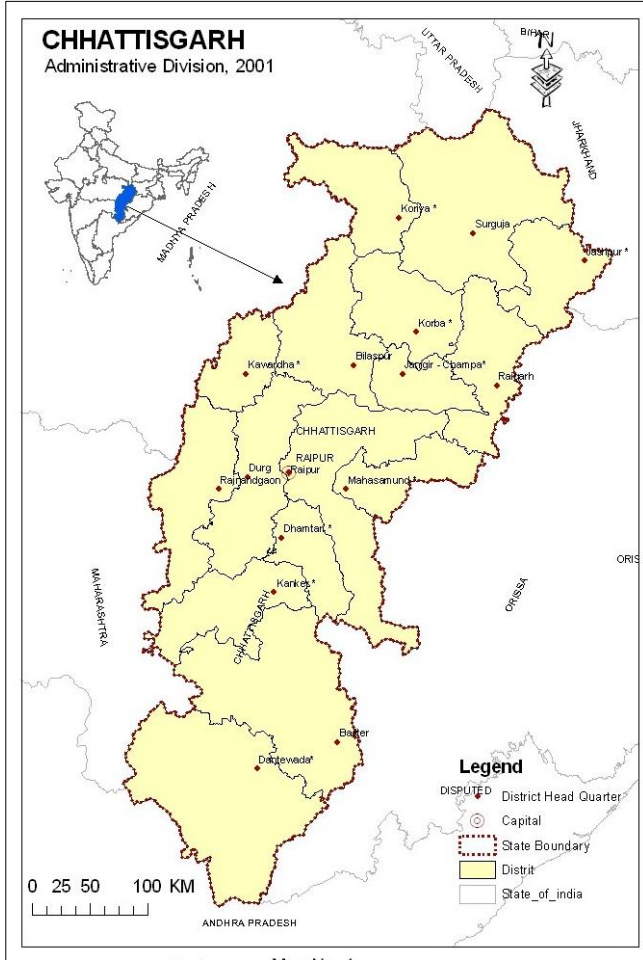
अध्ययन का उद्देश्य

प्रमुख शोध अध्ययन का प्रमुख उद्देश्य निम्नलिखित है।

1. प्रदेश के पाट एवं पहाड़ी प्रदेश में स्थित प्रमुख ऊँची चोटियों को प्रमाणिक स्रोत के आधार पर समीक्षा करना तथा प्रदेश की ऊँची चोटियों का सटीक ज्ञान प्रलेखित करना।

Corresponding Author:**डॉ. पुरुषोत्तम लाल चंद्राकर**सह प्राध्यापक, भूगोल अध्ययनशाला, पं.
रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय, रायपुर,
छत्तीसगढ़, भारत

2. प्रदेश के पाट एवं पहाड़ी प्रदेश में स्थित ऊँची चोटियों के भ्रम एवं विवाद का तथ्यात्मक हल ढूँढना।



Map No. 1

अध्ययन प्रविधि

प्रस्तुत शोध पत्र द्वितीयक आंकड़ों पर आधारित है। भारत सरकार के सर्वे ऑफ इंडिया द्वारा प्रकाशित नवीनतम स्थलाकृति मानचित्र को प्रमाणिक संदर्भ मानकर अध्ययन की समीक्षा की गई है। अध्ययन में छत्तीसगढ़ का भूगोल, छत्तीसगढ़ सामान्य अध्ययन, जिला जनगणना पुस्तिका, सेंट्रल प्राविसेंस डिस्ट्रिक्ट गजेटियर्स सेंट्रल प्राविसेंस गजेटियर्स, छत्तीसगढ़ फ्यूडररी तथा ऑन लाईन स्रोत को सम्मिलित किया गया है।

प्रदेश के पाट एवं पहाड़ी प्रदेश स्थित ऊँची चोटियों को आरेख, सारणी एवं मानचित्र में प्रदर्शित कर अध्ययन को सरल एवं बोधगम्य बनाने का प्रयास किया गया है। कम्प्यूटर एवं सेटेलाइट इमेजरी को भी अध्ययन की समीक्षा का आधार बनाया गया है।

शोध परिकल्पना

प्रस्तुत शोध विषय छत्तीसगढ़ धरातलीय स्वरूप—पाट एवं पहाड़ी प्रदेश में स्थित ऊँची चोटियों की समीक्षा हेतु निम्नलिखित शोध परिकल्पना का परीक्षण किया गया है।

छत्तीसगढ़ में विस्तृत पाट एवं पहाड़ों की ऊँचाईयों धरातल पत्रक एवं जन सांख्यिकीय कथनों में महत्वपूर्ण असमानता पायी जाती है।

1. पहाड़ी प्रदेश

छत्तीसगढ़ राज्य का 15 प्रतिशत भाग में पहाड़ी है। यहां मेकल पर्वत श्रेणी, चांगभरखार—देवगढ़, छुरी—उदयपुर, अबूझमाड एवं

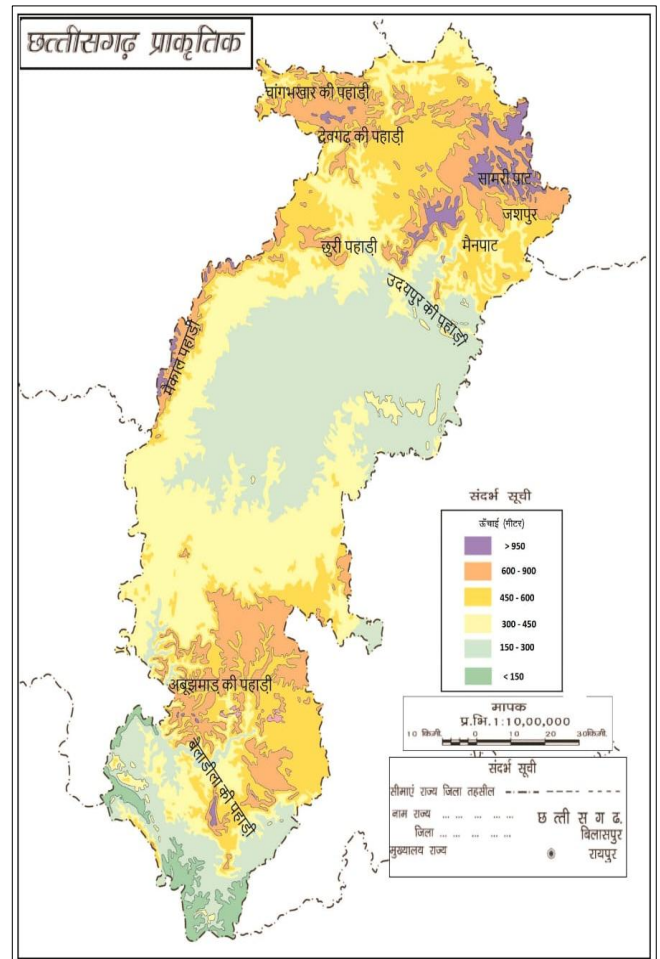
बैलाडीला प्रमुख पहाड़ी क्षेत्र है। इनका विस्तार, ऊँचाई एवं महत्व का विवरण निम्नानुसार है

अ. मेकल पर्वत श्रेणी:

यह पर्वत श्रेणी सतपुड़ा पर्वत श्रेणी का पूर्वी विस्तार है। भूवैज्ञानिकों के अनुसार इस पर्वत श्रेणी का निर्माण सिलूरियन एवं डिवोनियन कल्पों में हुआ था। पुराणों में इस पर्वतमाला को शुक्तिमत और ऋक्ष पर्वत श्रेणी नाम से संबोधित किया गया है। मेकल पर्वत श्रेणी का विस्तार छत्तीसगढ़ राज्य के पश्चिमी भाग में राजनांदगांव, खैरागढ़—छुईखदान—गंडई, कबीरधाम, मुंगेली तथा गोरेला—पेण्ड्रा—मरवाही जिलों में (मानचित्र 2) है। यह पर्वत श्रेणी वन संसाधन खनिज संसाधन (बाक्साइट, लौह अयस्क, छुई) और जल संसाधन की दृष्टि से समृद्ध है।

अचानकमार अभयारण्य, भोरमदेव अभयारण्य, चिल्फी घाटी, ज्वालेश्वर तीर्थ, राजमेढगढ़, कबीर चबुतरा, भोरमदेव, पचराही, रामचुवा, डोगेश्वर महादेव, बमलेश्वरी देवी मंदिर डोंगरगढ़ इत्यादि धार्मिक एवं दर्शनीय स्थल इसी पर्वत श्रेणी में अवस्थित है। पुराणों में इस पर्वतमाला को शिव के समान पूजनीय लिखा गया है। गोस्वामी तुलसीदास जी ने राम चरित मानस में लिखा है कि “शिवप्रिय मेकल शैलसुता सी सकल सिद्धी सुख संपत्ति राशी”। इस पर्वत श्रेणी का अमरकंटक देश का प्रसिद्ध तीर्थ एवं तपोभूमि है।

नर्मदा, सोन, जोहिला, अरपा, आगर, मनियारी, फोंक, सकरी आदि नदियों का उद्गम मेकल पर्वत श्रेणी में हैं। कचांदी, रक्षाझाग, दुर्गाधारा, हण्डीकुण्डी, सोन, छुटकी द्वार जल—प्रपात इस श्रेणी के मनोरम दर्शनीय स्थल हैं। यह पर्वत श्रेणी बैगा विशेष पिछड़ी जनजाति का आदिम प्रिय निवास स्थान है।



Map No. 2

यद्यपि सेन्ट्रल प्राविन्सेस डिस्ट्रिक्ट गजेटियर्स बिलासपुर डिस्ट्रिक्ट (ए. ई. नेल्सन 1910) के पृष्ठ क्र. 8 में लिलवानी पहाड़ (मेकल श्रेणी) 1125 मीटर को बिलासपुर जिले की सबसे ऊँची चोटी उल्लेखित किया गया है। मध्यप्रदेश जिला गजेटियर बिलासपुर जिला (1978) के पृष्ठ क्रमांक 07 में बाहमनगढ़ (1127 मीटर) को ऊँची चोटी लिखा है।

डिब्रेट ई.टी. ने छत्तीसगढ़ फ्यूडेटरी स्टेट गजेटियर्स (1909) में पृष्ठ क्र. 110 कवर्धा स्टेट के विवरण में रबदा पहाड़ी (3058 फीट या 932 मीटर) को मेकल श्रेणी की सबसे ऊँची चोटी लिखा है।

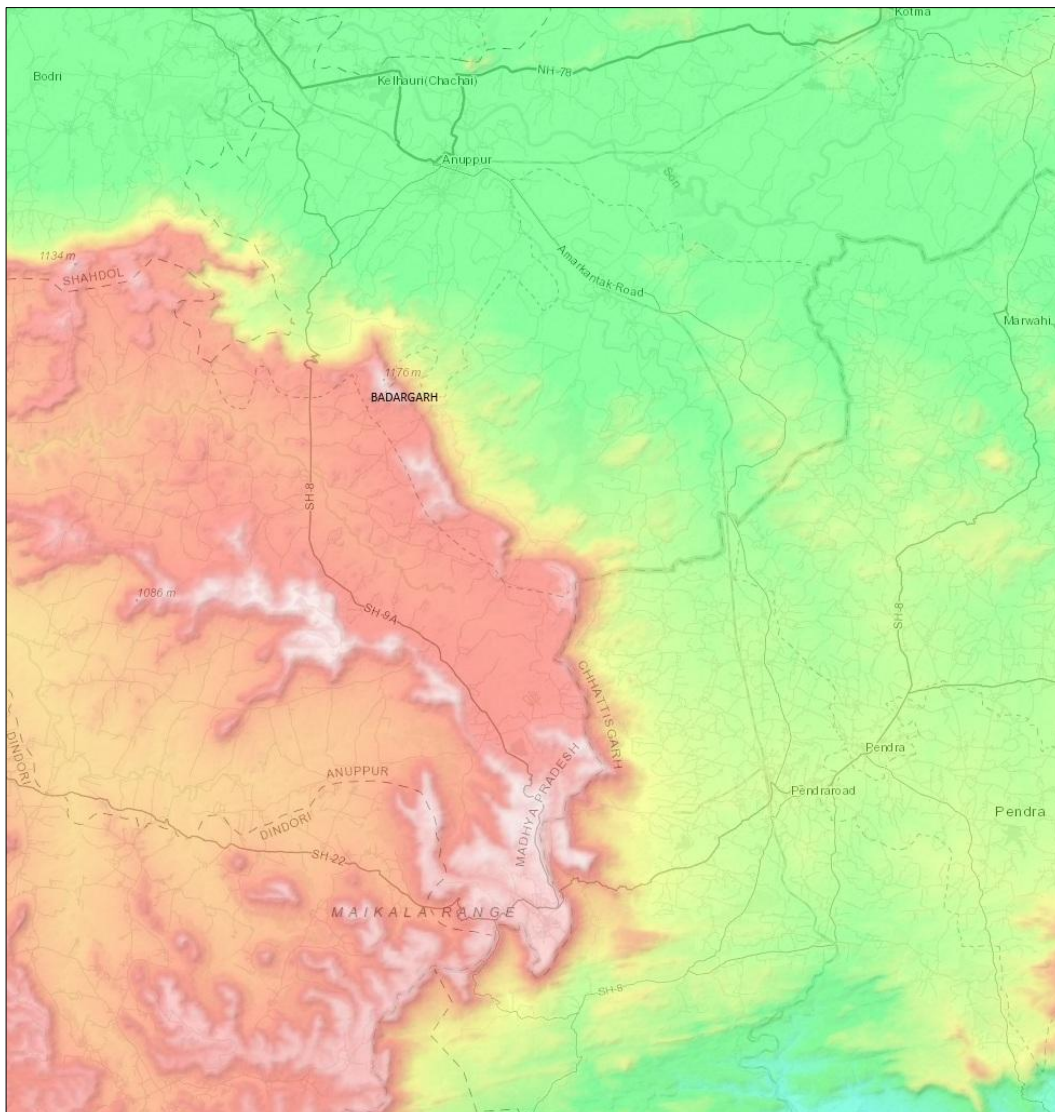
डॉ. मन्जू मित्रा ने अपनी पुस्तक एग्रीकल्चर ऑफ छत्तीसगढ़ बेसिन (1980) में अमरकंटक शिखर (1065 मीटर) को मेकल श्रेणी का ऊँची चोटी उल्लेखित किया है। डॉ. एल. एन. वर्मा, (2017) ने छत्तीसगढ़ का भूगोल पुस्तक में मेकल श्रेणी के वर्णन में बाहमनगढ़ (1127 मीटर) ऊँची है, उल्लेख किया है।

छत्तीसगढ़ के प्रथम एटलस (01 नवंबर, 2000) तथा छत्तीसगढ़ का भूगोल (डॉ. कौशलेन्द्र त्रिपाठी एवं डॉ. पुरुषोत्तम चंद्राकर, 2001), छत्तीसगढ़ की भौगोलिक समीक्षा (डॉ. संतराम कमलेश, 2002), ज्योग्राफी ऑफ छत्तीसगढ़ (डॉ. विजय तिवारी, 2004) आदि लेखकों ने अपनी पुस्तकों में बदरगढ़ को (1176 मीटर ऊँची) मेकल श्रेणी का सबसे ऊँची चोटी लिखा है। किंतु इन लेखकों ने बदरगढ़ को छत्तीसगढ़ में विस्तृत मेकल श्रेणी की सबसे ऊँची चोटी नहीं लिखा है। उपर्युक्त संदर्भ में उल्लेखनीय है कि मेकल श्रेणी का विस्तार छत्तीसगढ़ के पश्चिम भाग के साथ-साथ

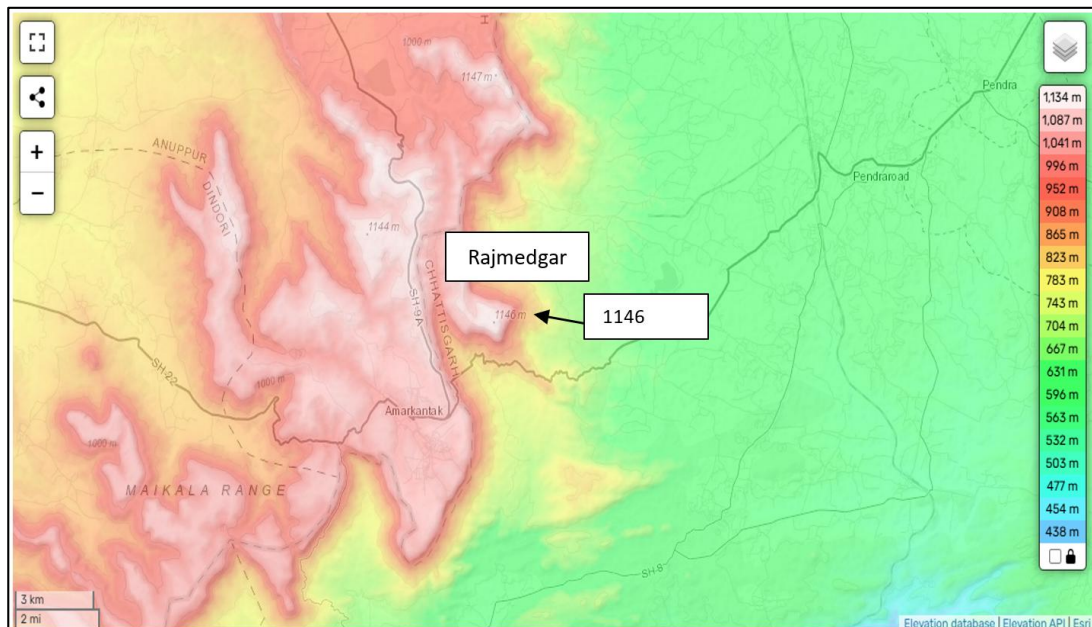
मध्यप्रदेश के मंडला एवं अनूपपुर जिलों में भी है। वर्तमान में बदरगढ़ मध्यप्रदेश के अनूपपुर जिला में राजेन्द्रग्राम के पास बदरग्राम के निकट स्थित मेकल श्रेणी का भाग (मानचित्र 3) है। मेकल श्रेणी के अध्ययन में उसकी सबसे ऊँची चोटी बदरगढ़ ही है। जहाँ तक प्रश्न है छत्तीसगढ़ में विस्तृत मेकल श्रेणी की सबसे ऊँची चोटी का तो इसका उत्तर धरातल पत्रक क्रमांक २ 44 श्र 13 (64 २/13) के अनुसार छत्तीसगढ़ में मेकल श्रेणी का राजमेढगढ़ पहाड़ी का देवथानी पहाड़ (1125 मीटर) सबसे ऊँची चोटी है। इसे स्थानीय लोग लिलवानी पहाड़ के नाम से संबोधित करते हैं जिसे बिलासपुर जिला के गजेटियर में उल्लेखित किया गया है। जहाँ तक बम्हनगढ़ शिखर (1127 मीटर) की बात है तो इसकी ऊँची चोटी मध्यप्रदेश के अनूपपुर जिले के सीमा में है। (मानचित्र 4 एवं धरातल पत्रक 1) है।

सेटेलाइट इमेजरी पर आधारित टोपोग्राफिकल डिजिटल मानचित्र में छत्तीसगढ़ के मेकल श्रेणी की सबसे ऊँची चोटी राजमेढगढ़ (1148 मीटर) प्रदर्शित है। यथार्थ ऊँची चोटी ज्ञात करने के लिए प्रत्यक्ष यांत्रिक सर्वेक्षण की आवश्यकता है।

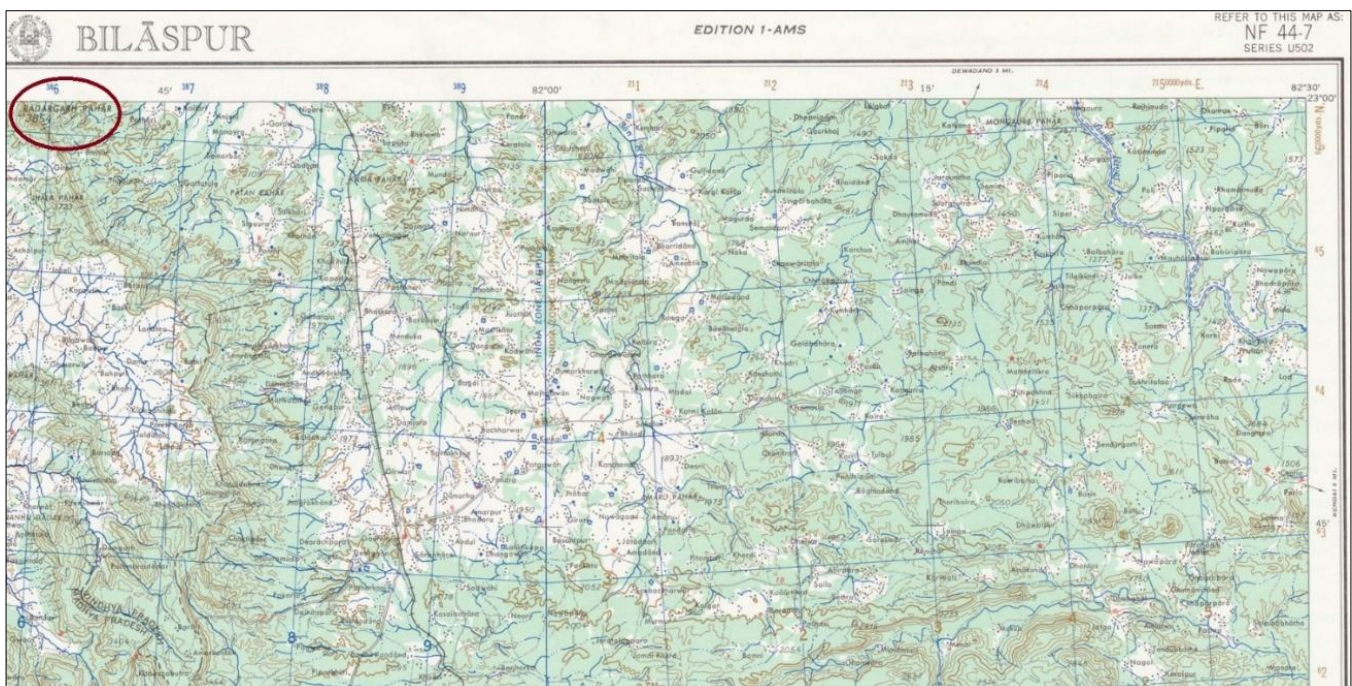
छत्तीसगढ़ लोक सेवा आयोग एवं व्यावसायिक शिक्षा मंडल ने विभिन्न प्रतियोगी परीक्षाओं में कई बार छत्तीसगढ़ के मेकल श्रेणी की सबसे ऊँची चोटी का प्रश्न के रूप में पूछा और उसके उत्तर बदरगढ़ (1176 मीटर) को माना है, जो विवाद का विषय रहा है। छत्तीसगढ़ सामान्य ज्ञान की पुस्तकों में भी इस प्रश्न का उत्तर बदरगढ़ (1176 मीटर) लिखा गया है, जो तथ्यहीन है।



मानचित्र 3



मानचित्र 4



धरातल पत्रक 1

ब. चांगभखार देवगढ़ की पहाड़ी

यह पहाड़ी क्षेत्र, वृहद भौतिक विभाग बघेल खण्ड पठार में विस्तृत है। प्रदेश में प्रशासनिक दृष्टि से भरतपुर-मनेन्द्रगढ़-चिरमिरी एवं कोरिया जिलों में विस्तृत है, आजादी के पूर्व ये दोनों जिले चांगभखार एवं कोरिया स्टेट का भाग था। यह पहाड़ी क्षेत्र हरे भरे जंगल एवं कोयला खनन के लिए प्रसिद्ध है। यह पहाड़ी क्षेत्र गंगा एवं महानदी प्रवाह प्रणाली के मध्य जल विभाजक है।

इस क्षेत्र से हसदेव गोपद बनास आदि नदियों का उद्गम है। हसदेव नदी द्वारा बनाया गया अमृत धारा जल-प्रपात अत्यंत मनोरम है। प्रदेश का गुरुघासीदास राष्ट्रीय उद्यान इसी पहाड़ी क्षेत्र में विस्तृत है।

सरगुजा जिला गजेटियर (1998) के पृष्ठ क्रमांक 4 के अनुसार इस पहाड़ी की प्रमुख ऊँची चोटियाँ मुस्की पहाड़ (1086 मीटर), देवगढ़ पहाड़ (1029 मीटर), राजपुरी पहाड़ (1030 मीटर) एवं

मेन्झा पहाड़ (1024 मीटर) है। डिब्रेट ई. टी. ने छत्तीसगढ़ प्यूडेटरी स्टेट्स गजेटियर्स (1909) में चांगभखार स्टेट की ऊँची चोटी मुरेरगढ़ (3027 फीट या 923 मीटर) और कोरिया स्टेट में ऊँची चोटी देवगढ़ (3370 फीट या 10257 मीटर) पहाड़ी का उल्लेख है।

स. अबुझमाड़ की पहाड़ी

यह पहाड़ी क्षेत्र आज भी अनजान एवं रहस्यमयी है। इसके कई भागों में आज भी पहुँचा नहीं जा सका है। इस पहाड़ी का विस्तार प्रदेश के नारायणपुर जिले में है। यह पहाड़ी क्षेत्र विशेष पिछड़ी जनजाति अबुझमाड़िया का प्रिय आदिम निवास क्षेत्र है। यह पहाड़ी लौह अयस्क, वन संसाधन एवं मनोरम वन्य दृश्य और जल-प्रपात पर्यटन की दृष्टि से महत्वपूर्ण है। यहां रावघाट पहाड़ एवं दल्ली राजहरा पहाड़ लौह अयस्क खनन के लिए प्रसिद्ध है। यह नक्सल प्रभावित क्षेत्र है।

गजेटियर ऑफ़ इंडिया (2000) डिस्ट्रिक्ट बस्तर डायरेक्टोरेक्ट ऑफ़ राजभाषा एवं संस्कृति विभाग मध्यप्रदेश भोपाल पृष्ठ क्रमांक 5 के अनुसार इस पहाड़ी का दक्षिणी भाग छोटा डोंगर नचल पहाड़ 989 मीटर ऊँची है, जो ओरछा के पास स्थित है। तथा पृष्ठ क्रमांक 6 के अनुसार इस पहाड़ी की सबसे ऊँची चोटी सलबत ग्राम के निकट (3030 फीट या 923.5 मीटर) है। धरातल पत्रक 65 २ के अनुसार छोटाडोंगर के पास स्थित टोडानार शिखर (1013 मीटर) अबूझमाड पहाड़ी (नारायणपुर जिला) का सबसे ऊँची चोटी है।

द. बैलाडीला पहाड़

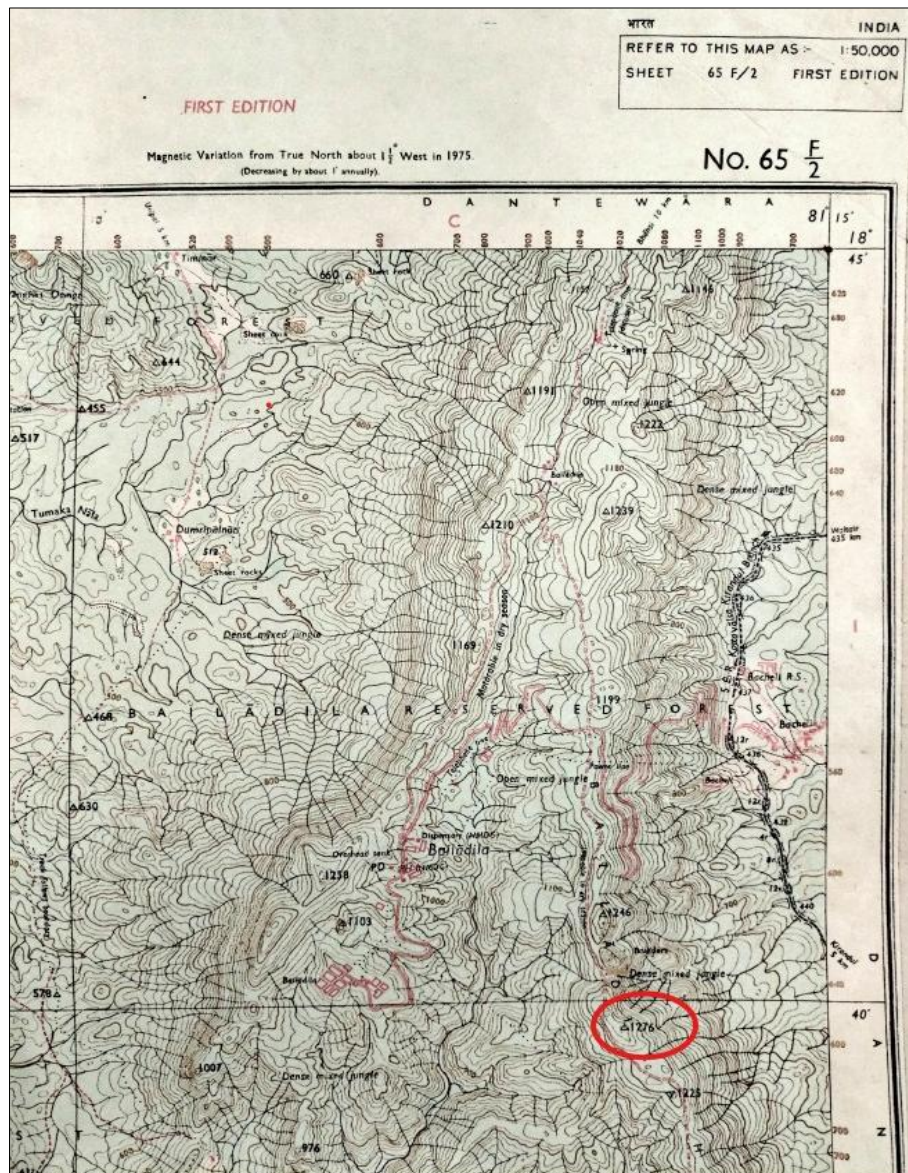
यह प्रसिद्ध पहाड़ी प्रदेश दन्तेवाड़ा जिला में इन्द्रावती नदी की बायी ओर उत्तर-दक्षिण विस्तृत है। यह पूर्वी घाट का विस्तार है। प्रदेश में इसका उत्तर दक्षिण विस्तार 55 किमी. है। इस पहाड़ी का बचेली घाटी, आकाशनगर, कैलाश नगर, गणेश जी की मूर्ति एवं झरना, के साथ-साथ लौह अयस्क खदान दर्शनीय है। यहां से लौह अयस्क का विशाखापट्टनम बंदरगाह से जापान को निर्यात किया जाता है।

जिला जनगणना पुस्तिका बस्तर जिला सन् 1961 के पृष्ठ क्रमांक गम्प में तुलसी डोंगरी (3928 फीट या 1197.25 मीटर) को सबसे ऊँचा बिन्दू उल्लेखित किया गया है, जबकि बस्तर जिला के गजेटियर्स के पृष्ठ क्रमांक 6 में बैलाडीला को बस्तर क्षेत्र की

सबसे ऊँची पर्वत श्रेणी लिखा गया है तथा इसकी सबसे अधिक ऊँची चोटी की ऊँचाई 4185 फीट या 1275.4 मीटर उल्लेखित किया गया है। इस ऊँचाई का उल्लेख धरातल पत्र क्रमांक 65 २/2 में है। जिसे धरातल पत्रक में शून्यांत में 1276 मीटर प्रदर्शित (मानचित्र 6) है। सेन्टल प्राविन्सेस गजेटियर्स छत्तीसगढ़ फ्यूडेटरी स्टेट्स सन् 1909 के पृष्ठ क्र. 25 में बैलाडीला की सबसे ऊँची चोटी 4160 फीट या 1267 मीटर उल्लेखित किया गया है। इसे बैलाडीला इसलिए कहा जाता है क्योंकि यह बैल के कूबड जैसा दिखता है।

छत्तीसगढ़ के प्रथम एटलस के पांचवा संस्करण, (2012 डॉ. कौशलेन्द्र त्रिपाठी एवं डॉ. पुरुषोत्तम चंद्राकर) में दन्तेवाड़ा जिला के बैलाडीला पहाड़ी का नंदीराज शिखर (1265 मीटर) को धरातल पत्रक 65 २ के अनुसार छत्तीसगढ़ की सबसे सबसे ऊँची चोटी के नाम से उल्लेखित किया गया है, किंतु छत्तीसगढ़ के सामान्य ज्ञान की पुस्तकों में गौरलाटा (1225 मीटर) को छत्तीसगढ़ की सबसे सबसे ऊँची चोटी के नाम से उल्लेखित किया गया है। जिसे छत्तीसगढ़ लोकसेवा आयोग एवं व्यावसायिक परीक्षा मण्डल प्रमाणिक उत्तर मानती है, जो सत्य नहीं है।

धरातल पत्र क्रमांक 65 २/2 के अनुसार दन्तेवाड़ा जिला के बैलाडीला पहाड़ी का नंदीराज शिखर (1276 मीटर) छत्तीसगढ़ की सबसे सबसे ऊँची चोटी (धरातल पत्रक 2) है।



धरातल पत्रक 2

2. पाट प्रदेश

यह पूर्वोत्तर छत्तीसगढ़ में सरगुजा, बलरामपुर-रामानुजगंज तथा जशपुरनगर जिला में विस्तृत एक महत्वपूर्ण उच्चावच है। यह स्थलाकृति यद्यपि पठार है, किन्तु अपने शीर्ष में सपाट तथा पार्श्व में सोपान सदृश्य तीव्र ढालदार है। इसलिए इसे स्थानीय भाषा में पाट कहा जाता है। यह स्थलाकृति छोटानागपुर पठार का पश्चिमी भाग है।

इसकी संरचना में दफन ट्रेप, लैटेराइट, ग्रेनाइट तथा नीस चट्टानें मिलती हैं। जिसमें बाक्साइट का प्रचुर भण्डार है। यह क्षेत्र पर्यटन के लिए प्रसिद्ध है। प्रदेश के 10-12 प्रतिशत भाग में पाट क्षेत्र का विस्तार है। इसकी औसत ऊँचाई 750-1250 मीटर के मध्य है। इस क्षेत्र को अलग अलग नामों से संबोधित किया जाता है, जिनका विवरण निम्नलिखित है—

अ. मैनपाट

इस विशाल पाट क्षेत्र का विस्तार सरगुजा जिला के कमलेश्वरपुर तहसील के अंतर्गत है। इस पाट का प्राकृतिक सौन्दर्य अत्यंत मनोरम है। दलदली, उल्टापानी, फीस प्वाइंट, मेहता प्वाइंट, टाईगर प्वाइंट, चीड़ प्वाइंट हरे भरे जंगल दर्शकों का मन मोह लेता है। यहां गर्मी के दिनों में मौसम सुखद रहता है तथा ठण्ड के दिनों में कभी-कभी (दिसम्बर एवं जनवरी) बर्फ की चादर से यह भूमि आच्छादित हो जाती है।

यहां तिब्बती शरणार्थियों को सन् 1962 में 12 कैम्पों में बसाया गया था। इसे छोटा तिब्बत एवं छत्तीसगढ़ का शिमला, उपनाम से भी संबोधित किया जाता है।

जिला जनगणना पुस्तिका सरगुजा जिला (1961) के पृष्ठ क्रमांक गग्न में इस पाट को 29 कि. मी. (18 मील) लम्बा और 12 कि. मी. (6-8 मील) चौड़ा तथा इसकी अधिकतम ऊँचाई 1152.44 मीटर उल्लेखित किया गया है।

जारंग पाट सरगुजा एवं जशपुर जिला की सीमा में उत्तर से दक्षिण लगभग 160 वर्ग कि. मी. क्षेत्रफल में विस्तृत हैं इसकी अधिकतम ऊँचाई 1145 मीटर है।

ब. सामरी पाट

इस पाट भूमि का विस्तार बलरामपुर-रामानुजगंज जिला में 1400 वर्ग कि. मी. में विस्तृत है। यहां कन्हार नदी उत्तर की ओर

प्रवाहित होती हुई कोठली (60 मीटर ऊँचा) नामक सुंदर जल प्रपात की रचना की है तथा इस पाट को दो असमान भागों में विभाजित की है।

इस विभाजन का पश्चिमी भाग लहसुन पाट कहलता है। इसकी सबसे ऊँची चोटी गौरलाटा-शिखर 1225 मीटर ऊँची है। छत्तीसगढ़ के प्रथम एटलस के पांचवा संस्करण, (2012 डॉ. कौशलेन्द्र त्रिपाठी एवं डॉ. पुरुषोत्तम चंद्राकर) में इस शिखर को संशोधित कर प्रदेश की दूसरी ऊँची शिखर के नाम से उल्लेखित किया गया है। किंतु छत्तीसगढ़ के भूगोल से संबंधित अन्य पुस्तकों, छत्तीसगढ़ सामान्य ज्ञान एवं ऑन लाइन पोर्टल में इस शिखर को छत्तीसगढ़ की सबसे ऊँची चोटी के रूप में उल्लेखित किया गया है !

सामरी पाट के पूर्वी भाग को जमीरा पाट कहते हैं। इसकी अधिकतम ऊँचाई 1159 मीटर है। यह पाट क्षेत्र वन संसाधन, बाक्साइट खनिज एवं पर्यटन की दृष्टि से प्रसिद्ध है। परता घरसा (1158 मीटर) तथा चापी (1155 मीटर) अन्य ऊँचा स्थान है। सेमरसोत अभयारण्य इस क्षेत्र में विस्तृत है।

स. जशपुर पाट

इस पाट भूमि का विस्तार प्रदेश के जशपुर जिला के अंतर्गत 4575 वर्ग कि. मी. क्षेत्रफल में है। इसका उत्तरी भाग तुलनात्मक रूप से दक्षिण भाग से अधिक ऊँचा है। इसलिए उत्तरी भाग को ऊपर घाट एवं दक्षिणी भाग को नीच घाट कहते हैं।

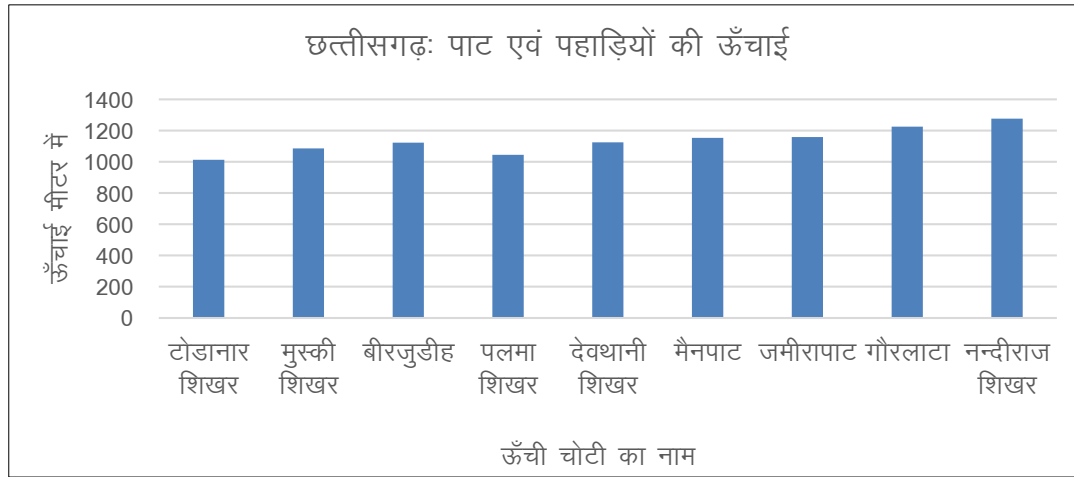
ऊपर घाट में गर्मी के दिनों में मौसम सुखद रहता है। यहां झरना, चाय बगान, खुड़िया रानी, सोगड़ा आश्रम दर्शनीय स्थल है। इस क्षेत्र से ईब, कन्हार, डोरकी आदि नदियों का उदगम स्थल है। यह क्षेत्र गंगा, महानदी एवं ब्रम्हाहणी नदी क्रम के बीच जल विभाजक है।

ईब नदी में सोना के कण प्राप्त होता है। ऊपर घाट पहाड़ी कोरवा एवं बिरहोर विशेष पिछड़ी जनजाति का प्रिय निवास स्थान है तो दूसरी ओर नीच घाट को नागलोक कहा जाता है।

ऊपर घाट में पण्डरापाट (1057 मीटर), अमरटन (1086 मीटर), बिरजुडीह (1123 मीटर), सुशेला पहाड़ी (1118.6 मीटर), रानी झूला (1075 मीटर) एवं कोटवार (1034 मीटर) प्रमुख ऊँचा स्थान हैं।

सारणी 1				
छत्तीसगढ़: पाट एवं पहाड़ियों की ऊँचाई				
क्र.	पाट/पहाड़ का नाम	ऊँची चोटी का नाम	ऊँचाई मीटर में	स्थिति जिला का नाम
1	अबूझमाड पहाड़ी	टोडानार शिखर	1013 मीटर	नारायणपुर
2	चांगभखार-देवगढ़ पहाड़ी	मुस्की शिखर	1086 मीटर	भरतपुर-मनेन्द्रगढ़-चिरमिरी, कोरिया
3	जशपुर पाट	बीरजुडीह	1123 मीटर	जशपुर
4	छुरी-उदयपुर पहाड़ी	पलमा शिखर	1045 मीटर	कोरबा जिला
5	मेकल पर्वत श्रेणी	देवथानी शिखर	1125 मीटर	गौरला-पेन्द्रा-मरवाही
6	मैनपाट	मैनपाट	1153 मीटर	सरगुजा
7	जमीरापाट (सामरीपाट)	जमीरापाट	1159 मीटर	बलरामपुर-रामानुजगंज
8	लहसुन (सामरीपाट)	गौरलाटा	1225 मीटर	बलरामपुर-रामानुजगंज
9	बैलाडीला पहाड़ी	नन्दीराज शिखर	1276 मीटर	दन्तेवाड़ा

स्रोत:- धरातल पत्रक, जिला जनगणना पुस्तिका एवं गजेटीयर



आरेख क्र. 1

उपर्युक्त सारणी क्र. 1 एवं आरेख क्र. 1 के अनुसार छत्तीसगढ़ की सबसे ऊँची चोटी नन्दीराज (1276 मीटर) दत्तेवाडा जिला के बैलाडिला पहाड़ी में स्थित है। इसके बाद गौरलाटा (1225 मीटर) दूसरी सबसे ऊँची चोटी है। यह शिखर बलरामपुर-रामानुजगंज जिला में स्थित है। राज्य में मेकल श्रेणी की सबसे ऊँची चोटी राजमेढगढ़ पहाड़ के देवथानी शिखर (1125 मीटर) है। यह शिखर गौरेला-पेण्ड्रा-मरवाही जिला में स्थित है।

संदर्भ

1. त्रिपाठी कौशलेन्द्र एवं चन्द्राकर पुरुषोत्तम (2000) : छत्तीसगढ़ एटलस, रायल प्रिंटिंग प्रेस बिलासपुर (छ.ग.) एवं पांचवा संस्करण 2012।
2. गजेटियर ऑफ इण्डिया (1976-1989-2000): डिस्ट्रिक्ट गजेटियर्स बस्तर, रायपुर, बिलासपुर, दुर्ग, राजनांदगांव, रायगढ़ एवं सरगुजा डिस्ट्रिक्ट।
- 3- Neltson AE. Central Provinces District Gazetteers Vol. A Raipur, Bilaspur District Pioneer Press Allahabad (U.P.); 1910.
4. तिवारी विजय कुमार (2001) छत्तीसगढ़ एक भौगोलिक अध्ययन, हिमालया पब्लिशिंग हाऊस मुंबई।
5. त्रिपाठी कौशलेन्द्र एवं चन्द्राकर पुरुषोत्तम (2001) छत्तीसगढ़ का भूगोल, शारदा प्रकाशन बिलासपुर (छ.ग.)।
6. तिवारी विजय कुमार (2004) : ज्योग्राफी ऑफ छत्तीसगढ़, हिमालया पब्लिशिंग मुम्बई।
7. सिंह आर. एल. (1971) : इण्डिया ए रिजीनल ज्योग्राफी, नेशनल ज्योग्राफीकल सोसायटी ऑफ इण्डिया वाराणसी (उ. प्र.)।
8. वर्मा एल.एन. (2017) : छत्तीसगढ़ का भूगोल, मध्यप्रदेश हिन्दी ग्रंथ अकादमी भोपाल
9. जनगणना पुस्तिका (1961) : जिला जनगणना पुस्तिका, जिला बिलासपुर दुर्ग सरगुजा रायगढ़ एवं बस्तर जिला।
10. डिब्रेट ई.टी. (1909) सेन्ट्रल प्राविन्सेस गजेटियर, छत्तीसगढ़ फ्यूडेटरी स्टेट्स।
11. धरातल पत्रक — सर्वे ऑफ इण्डिया 64 M अम्बिकापुर, 64 E बस्तर, 64 I बैकुंठपुर, 65 F बस्तर, 64 J बिलासपुर।
12. ऑनलाइन पोर्टल, वेबसाइट